Achchhi Niyyat Ki Barakat (Hindi)

अच्छी निय्यत की बरकत

- निय्यत की बरकत से मग़्फ़िरत की दिलचस्प हिकायत 01
- अच्छों की नक़्ल भी अच्छी होती है 10
- उम्मते मुस्तफ़ा की ख़ुसूसिय्यत 20
- नमाज़े बा जमाअत का अजीब जज़्बा 26
- सब से पहले क्या सीखना फ़र्ज़ है 28

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

अच्छी निय्यत की बरकत

येह रिसाला (**अच्छी निय्यत की बरकत**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात

MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

येह मज़्मून "नेकी की दा'वत" के सफ़ह़ा 116 ता 137 से लिया गया है।

अच्छी निय्यत की बरकत

दुआए अ़त्तार

या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 31 सफ़ह़ात का रिसाला "**अच्छी निय्यत की बरकत**" पढ़ या सुन ले उस के सारे नेक काम अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमा और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बना। आमीन

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : बेशक ब रोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे।

(ترمذی ج۲ص۲۷ حدیث ٤٨٤)

निय्यत की बरकत से मग़्फ़िरत की दिलचस्प ह़िकायत :

मन्क़ूल है कि एक **अ़जमी** (या'नी ग़ैर अ़रबी शख़्स) चन्द आदमियों (अ़रबियों) के पास से गुज़रा जो बैठे मज़ाक़ और छेड़छाड़ में मसरूफ़ थे। (अ़रबी के जुम्ले सुन कर) वोह ग़रीब समझा कि येह लोग **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कर रहे हैं, उस ने ह़ुस्ने निय्यत के मुत़ाबिक़ (या'नी अच्छी निय्यत के साथ) उन की त़रह़ कहना शुरूअ़ कर दिया। कहा जाता है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अच्छी निय्यत की वज्ह से उस **अ़जमी** को बख़्श दिया।

(قُوتُ القلوب ج ۲ ص۲٦۳)

अच्छी निय्यतें दुश्वार हैं इस से तो पीठ पर कोड़े खाना आसान है : अच्छी अच्छी निय्यतें करने के लिये ज़रूरी है कि ज़ेहन हाज़िर रहे, जो अच्छी निय्यतों का आदी नहीं है उसे शुरूअ़ में ब तकल्लुफ़ इस की आ़दत बनानी पड़ेगी लिहाज़ा इब्तिदाअन इस के लिये सर झुकाए, आंखें बन्द कर के ज़ेहन को मुख़्तलिफ़ ख़यालात से ख़ाली कर के यक्सू हो जाना मुफ़ीद है। इधर उधर नज़रें घुमाते हुए, बदन सहलाते खुजाते हुए, कोई चीज़ रखते उठाते हुए या जल्द बाज़ी के साथ **निय्यतें** करना चाहेंगे तो शायद हो नहीं पाएंगी। **निय्यतों** की आ़दत बनाने के लिये इन की अहम्मिय्यत पर नज़र रखते हुए आप को सन्जीदगी के साथ पहले अपना ज़ेहन बनाना पड़ेगा। ह़ज़रते सय्यिदुना नुऐ़म बिन ह़म्माद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد फ़रमाते हैं : "**हमारी पीठ का कोड़े खाना अच्छी निय्यत के मुक़ाबले में आसान है।**" (تنبيهُ المُغتَرّين ص ٢٥)

दुन्यवी ने'मतों के सबब आख़िरत की ने'मतों में कमी आएगी : हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي का इर्शादे आ़ली है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होना गुनाह नहीं है, लेकिन इस से **सुवाल** ज़रूर होगा और जिस से ह़िसाब में पूछगछ हुई वोह हलाक हो जाएगा और जो आदमी दुन्या में मुबाह़ चीज़ों को इस्ति'माल करता है अगर्चे इसे क़ियामत में इस पर अ़ज़ाब नहीं होगा लेकिन इसी मिक्दार में आख़िरत की ने'मतें कम हो जाएंगी, ग़ौर तो कीजिये ! कितने बड़े नुक़्सान की बात है कि इन्सान फ़ानी ने'मतों के

हुसूल में बहुत जल्दी करे और इस के बदले उख़्रवी ने'मतों में कमी के ज़रीए़ नुक़्सान उठाए।" (اِحیاءُ الْعُلوم ج۵ ص۹۸)

दुन्यवी लज़्ज़ात का दिल से मिटा दे शौक़ तू
कर अ़ता अपनी इ़बादत का इलाही ज़ौक़ तू

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم

ख़ुश्बू लगाने की निय्यतें : अल्लाह तआ़ला की बे शुमार ने'मतों में से **ख़ुश्बू** भी एक बहुत प्यारी ने'मत है, इस का इस्ति'माल करना मुबाह़ (या'नी न सवाब न गुनाह) है, येह ने'मत इस त़रह़ इस्ति'माल करनी चाहिये कि **इ़बादत** बन जाए और सवाब हाथ आए। चुनान्चे इस को "इ़बादत" बनाने के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें करनी होंगी। जब भी कोई काम करने लगें तो एक दम शुरूअ़ मत कर दीजिये, पहले कुछ ठहर जाइये और ज़ेह्न पर ज़ोर दे कर **अच्छी अच्छी नियतें** कर लीजिये। मसलन ख़ुश्बू लगानी है तो उस की शीशी उठाने से क़ब्ल और अगर उठा ही ली है तो खोलने से पहले यक्सूई के साथ, सर झुका कर हो सके तो आंखें बन्द कर के इत़्मीनान से और ख़ूब तवज्जोह के साथ **निय्यतें** कीजिये। **इ़त्र** लगाने के ज़रीए़ मुख़्तलिफ़ सवाबात कमाने का मश्वरा देते हुए **आ़रिफ़ बिल्लाह, मुह़क़्क़िक़ अ़लल इ़त़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन,** ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى लिखते हैं : मुबाह़ कामों में भी अच्छी निय्यत करने से सवाब मिलेगा, मसलन ख़ुश्बू लगाने में इत्तिबाए़ सुन्नत और (मस्जिद में जाते हुए लगाने पर) ता'ज़ीमे मस्जिद (की निय्यत भी की जा सकती है),

फ़रह़ते दिमाग़ (या'नी दिमाग़ की ताज़गी) और अपने इस्लामी भाइयों से ना पसन्दीदा बू दूर करने की निय्यतें हों तो **हर निय्यत का अलग सवाब** मिलेगा। (اشعة اللمعات ج١ ص٣٧) यहां ह़स्बे ह़ाल **मज़ीद निय्यतें** भी शामिल की जा सकती हैं मसलन **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर शीशी उठाऊंगा, **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर ढक्कन खोलूंगा, **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर लगाऊंगा, मुसल्मानों और फ़िरिश्तों को ख़ुश्बू से फ़रह़त (या'नी सुरूर व ख़ुशी) पहुंचाऊंगा, (ख़ुसूसन गरमी में कपड़ों के अन्दर अगर पसीने की बदबू हो जाती हो तो येह निय्यत भी की जा सकती है कि) ख़ुद से बदबू दूर कर के मुसल्मानों को **ग़ीबत** से बचाऊंगा, (नमाज़ से क़ब्ल लगाने में येह निय्यत भी शामिल कर सकते हैं कि) नमाज़ के लिये ज़ीनत ह़ासिल करूंगा। ख़ुश्बू सूंघ कर **दुरूद शरीफ़** पढ़ूंगा, (ख़ुश्बू ने'मत है इस लिये इस्ति'माल करने और सूंघने में बत़ौरे शुक्रे इलाही) اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहूंगा। ख़ुश्बू लगाऊंगा ताकि अ़क़्ल में इज़ाफ़ा हो, इस से दीनी अह़काम (दीनी ता'लीम, दीनी तदरीस, सुन्नतों भरे बयान वग़ैरा) समझने में मदद ह़ासिल करूंगा। "एह़याउल उ़लूम" में है : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **"जिस की ख़ुश्बू अच्छी हो उस की अ़क़्ल में इज़ाफ़ा होता है।"** (إحياءُ العُلوم ج ٥ ص ٩٨)

ख़ुश्बू लगाने की ग़लत़ निय्यतों की निशान देही : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुश्बू लगाने में अक्सर शैत़ान ग़लत़ **निय्यत** में मुब्तला कर देता है। लिहाज़ा इ़त्र लगाने में **अच्छी निय्यतों** का ख़ुसूसी एहतिमाम होना चाहिये। चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते

सय्यिदुना अबू हामिद इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي का फ़रमाने आली है : इस निय्यत से ख़ुश्बू लगाना कि लोग वाह वाह करें या क़ीमती ख़ुश्बू लगा कर लोगों पर अपनी मालदारी का सिक्का बिठाने की निय्यत हो तो इन सूरतों में ख़ुश्बू लगाने वाला गुनहगार होगा और ख़ुश्बू बरोज़े क़ियामत मुर्दार से भी ज़ियादा बदबूदार होगी । **(ایضاً)**

दुन्या पसन्द करती है इत्रे गुलाब को
लेकिन मुझे नबी का पसीना पसन्द है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की बरकत : मीठे **मीठे इस्लामी भाइयो !** दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बुरी निय्यतों से नजात **और अच्छी निय्यतों** की आदात नसीब होंगी । एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है, मेरी फ़ौज में मुलाज़मत थी और मैं मॉडर्न नौ जवान था, अलबत्ता नमाज़ पढ़ा करता था । अम्मीजान की बीमारी के बाइस सख़्त तश्वीश थी, एक इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दी, मैं ने मा'ज़िरत चाहते

हुए उन से कहा : अम्मीजान सख़्त बीमार हैं ऐसी ह़ालत में उन्हें छोड़ कर सफ़र नहीं कर सकता। उन्हों ने मश्वरा दिया : "आप सिर्फ़ मदनी क़ाफ़िले में **सफ़र की निय्यत** कर लीजिये कि जब भी मौक़अ़ मिला, कर लूंगा और आज नमाज़े **तहज्जुद** अदा कर के गिड़गिड़ा कर अम्मीजान की सिह़्ह़त याबी के लिये दुआ़ फ़रमाइये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़रूर करम होगा।" उन्हों ने येह बात कुछ ऐसे दिल नशीन अन्दाज़ में कही कि दिल को लग गई और मैं ने **सफ़र की निय्यत** कर ली। रात उठ कर **तहज्जुद** अदा कर के ख़ूब रो रो कर दुआ़ मांगी, फिर नमाज़े **फ़ज्र** के लिये मस्जिद का रुख़ किया, वापसी पर जब घर पहुंचा तो ह़ैरत से खड़े का खड़ा ही रह गया ! क्या देखता हूं कि मेरी वोह ज़ार नज़ार (या'नी कमज़ोर) और सख़्त बीमार अम्मीजान जो ख़ुद उठ कर बैतुल ख़ला (या'नी वॉशरूम) भी नहीं जा सकती थीं बैठी इत़्मीनान से कपड़े धो रही हैं ! मैं ने अ़र्ज़ की ! अम्मीजान ! आप आराम फ़रमाइये कहीं त़बीअ़त ज़ियादा न बिगड़ जाए, मैं ख़ुद कपड़े धो लूंगा। इस पर फ़रमाया : बेटा ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज मुझे न कोई दर्द है न तक्लीफ़, मैं अपने आप को बहुत हलकी फुलकी मह़सूस कर रही हूं। येह सुन कर मेरी आंखों में ख़ुशी के आंसू आ गए, मेरे दिल में एक इत़्मीनान की कैफ़िय्यत पैदा हुई कि **सफ़र की निय्यत** की बरकत से दुआ़ को मक़्बूलिय्यत मिल गई है। इस्लामी भाई से मुलाक़ात पर तफ़्सील अ़र्ज़ की, तो उन्हों ने ख़ूब ह़ौसला बढ़ाया और हमदर्दाना मश्वरा दिया कि बिला ताख़ीर **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र कर

लीजिये। लिहाज़ा मैं **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र और इस दौरान आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से हमारे घर में **मदनी माह़ोल** बन गया, मुझ जैसा मॉडर्न नौ जवान दाढ़ी और इमामा सजा कर सुन्नतों की ख़िदमत में लग गया, अम्मीजान और मेरे बच्चों की मां दोनों इस्लामी बहनों के इज्तिमाअ़ में शिर्कत करती हैं। ग़ौर फ़रमाइये ! मैं ने सिर्फ़ मदनी क़ाफ़िले में **सफ़र की निय्यत** की और इस के सबब बरकत ही बरकत हो गई तो न जाने मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरे सफ़र की क्या क्या मदनी बहारें होंगी ! काश ! हर इस्लामी भाई हर माह कम अज़् कम तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र का आ़दी बन जाए।

अच्छी निय्यत का फल पाओगे बे बदल सब करो निय्यतें क़ाफ़िले में चलो
दूर बीमारियां और ना दारियां हों टलें मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **मदनी क़ाफ़िले** की निय्यत करने वाले का बेड़ा पार हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मां की सिह़ह़त के साथ साथ घर भर के लिये आख़िरत की राह़त के ह़ुसूल के लिये तय्यारियों का भी सामान हो गया। वाक़ेई **अच्छी निय्यत** फिर अच्छी निय्यत होती है। अच्छी निय्यत से **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र करने के क्या कहने !

जब जूता पहनने में उलटे पाउं से पहल की तो...... : ह़ुज़ूर मुह़द्दिसे आ'ज़म ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सरदार अह़मद क़ादिरी चिश्ती

عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के एक शागिर्दे रशीद फ़रमाते हैं कि मैं 1955 सि. ई. में जब दौरए ह़दीस शरीफ़ से फ़ारिग़ हुवा और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रुख़्सत ले कर आने लगा, मैं ने ग़लत़ी से अपना जूता पहले बाएं (या'नी उलटे) पाउं में पहन लिया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने देख कर मुझे फ़ौरन वापस बुला लिया, मुझे अपनी ग़लत़ी का एह़सास हो गया, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने (मुझे नेकी की दा'वत देते हुए) फ़रमाया : "जूता पहनने में **सुन्नत** येह है कि पहले दाएं (या'नी सीधे) पाउं में पहना जाए और जूता उतारने की सुन्नत येह है कि पहले बाएं (या'नी उलटे) पाउं से उतारा जाए।" (ह़याते मुह़द्दिसे आ'ज़म, स. 85)

जूते पहनने की निय्यतें : कोई सा भी काम हो एक दम शुरूअ़ कर देने के बजाए पहले कुछ ठहर कर **निय्यत** करने की आ़दत बनानी चाहिये मसलन **जूते पहनने लगे** हैं तो रुक जाइये और ह़स्बे ह़ाल पहले येह **निय्यतें** कर लीजिये : ❁ इत्तिबाए़ सुन्नत में जूते पहनूंगा ❁ चलने वाले के जूतों की आवाज़ चूंकि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ना पसन्द थी इस लिये राह चलते या सीढ़ी चढ़ते उतरते हुए आवाज़ न पैदा हो इस का ख़याल रखूंगा ❁ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ कर पहनूंगा ❁ जूते के ज़रीए़ पाउं को ज़ख़्म या गन्दगी वग़ैरा से मह़फ़ूज़ रखने की कोशिश के ज़रीए़ **इबादत** पर मदद ह़ासिल करूंगा ❁ पहनने में सीधे जूते से पहल करने की सुन्नत अदा करूंगा ❁ सुन्नते **तन्ज़ीफ़** अदा करूंगा या'नी पाउं को मैल कुचैल से बचाऊंगा। इसी त़रीक़े पर ह़स्बे ह़ाल मज़ीद निय्यतें भी की जा सकती हैं। इसी त़रह़ **जूते उतारते वक़्त**

भी بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ने, उलटे से पहल करने, मौक़अ़ हो तो बुज़ुर्गों की अदा की मुशाबहत करते हुए जूतों का अगला रुख़ क़िब्ले की त़रफ़ रखने वग़ैरा की **निय्यतें** हो सकती हैं। जूते **क़िब्ला रुख़** रखने के **मुतअ़ल्लिक़** अ़र्ज़ है, हुज़ूर मुह़द्दिसे आ'ज़म ह़ज़रत मौलाना सरदार अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد के शागिर्द व मुरीद मेरे मख़्दूम व मोह़तरम ह़ज़रते क़िब्ला मुफ़्ती अ़ब्दुल्लत़ीफ़ साह़िब اطال اللّٰہ عمرہٗ की सोह़बत में चन्द रोज़ गुज़ारने की सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को सआ़दत मिली, उन दिनों मुफ़्ती साह़िब مُدَّظِلُّہٗ का येह अ़मल देखा कि हमारे बे तरतीब रखे हुए जूतों, चप्पलों का रुख़ अपने दस्ते मुबारक से जानिबे क़िब्ला फ़रमा देते थे मैं ने **मुतअ़ज्जिब** हो कर सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया कि मैं ने क़िब्ला उस्ताज़े गिरामी हुज़ूरे मुह़द्दिसे आ'ज़म मौलाना सरदार अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد को देखा है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه न सिर्फ़ जूते बल्कि हर चीज़ क़िब्ला रू रखना पसन्द फ़रमाते थे और इस अ़मल में **सरकारे ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की इस ह़िकायत की त़रफ़ इशारा किया : चुनान्चे

लोटा क़िब्ला रुख़ हो गया : **एक** बार जीलान शरीफ़ के मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى का एक वफ़्द हुज़ूर सय्यिदुना **ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में ह़ाज़िर हुवा, उन्हों ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के लोटे शरीफ़ को ग़ैरे क़िब्ला रुख़ पाया (तो उस की त़रफ़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की तवज्जोह दिलाई इस पर) आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने ख़ादिम को जलाल भरी नज़र से देखा। वोह आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के जलाल की ताब न लाते हुए एक दम गिरा और

तड़प तड़प कर जान दे दी। अब एक नज़र लोटे पर डाली तो वोह ख़ुद बख़ुद **क़िब्ला रुख़** हो गया। (بہجۃُ الاسرار ص ۱۰۱)

अच्छों की नक़्ल भी अच्छी होती है : येह आ़म दस्तूर है कि जिस से मह़ब्बत होती है उस की हर अदा प्यारी लगती है, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم और, हुज़ूरे मुह़द्दिसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان से बहुत **मह़ब्बत** है। लिहाज़ा जब से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की येह अदा मा'लूम हुई है इस अदा को अदा करने की आ़दत बना ली है और अपने लोटे, चप्पल और दीगर चीज़ों का अगला रुख़ जानिबे क़िब्ला रहे इस की कोशिश रहती है। अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ **अल्लाह** वालों की नक़्क़ाली में यक़ीनन बरकत ही बरकत है और क्यूं न हो कि काएनात के तमाम **अल्लाह** वालों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : اَلْبَرَکَۃُ مَعَ اَکَابِرِکُم या'नी बरकत तुम्हारे बुज़ुर्गों के साथ है।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج٦ ص ٣٤٢ حديث ٨٩٩١)

“चल मदीना” के सात हुरूफ़ की निस्बत से जूते पहनने के 7 मदनी फूल

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** का मत़्बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला, “**101 मदनी फूल**” सफ़ह़ा 20 ता 22 से (मअ़ तसर्रुफ़) अ़र्ज़ है : **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ﴿1﴾ जूते ब कसरत इस्ति'माल करो कि आदमी जब तक जूते पहने होता है गोया वोह सुवार होता है। (या'नी कम थकता है)

(مُسلِم ص١١٦١ حديث٢٠٩٦) ﴾2﴿ जूते पहनने से पहले झाड़ लीजिये ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए, कहते हैं किसी जगह दा'वत में फ़ारिग़ हो कर एक साहिब ने जूं ही जूता पहना चीख़ निकल गई और पाउं लहू लुहान हो गया। दर अस्ल बात येह हुई कि खाने के दौरान किसी ने नोकदार हड्डी फेंकी तो वोह जूते के अन्दर चली गई और पहनने वाले ने जूते झाड़े बिग़ैर पहने तो पाउं ज़ख़्मी हो गया ﴾3﴿ सुन्नत येह है कि पहले सीधा जूता पहनिये फिर उलटा और उतारते वक़्त पहले उलटा जूता उतारिये फिर सीधा। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम में से कोई जूते पहने तो दाईं (या'नी सीधी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये और जब उतारे तो बाईं (या'नी उलटी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये ताकि दायां (या'नी सीधा) पाउं पहनने में अव्वल और उतारने में आख़िरी रहे। (بُخاری ج ٤ ص ٦٥ حديث ٥٨٥٥) **नुज़्हतुल क़ारी** में है : मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त हुक्म येह है पहले सीधा पाउं मस्जिद में रखे और जब मस्जिद से निकले तो पहले उलटा पाउं निकाले। मस्जिद के दाख़िले के वक़्त इस (जूते पहनने की तरतीब वाली) ह़दीस पर अ़मल दुश्वार है। **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने इस का ह़ल येह इर्शाद फ़रमाया है : जब मस्जिद में जाना हो तो पहले उलटे पाउं को निकाल कर जूते पर रख लीजिये फिर सीधे पाउं से जूता निकाल कर मस्जिद में दाख़िल हों। और जब मस्जिद से बाहर हों तो उलटा पाउं निकाल कर जूते पर रख लीजिये फिर सीधा पाउं निकाल कर सीधा जूता

पहन लीजिये फिर उलटा पहन लीजिये। (नुज़्हतुल क़ारी जि. 5, स. 530) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जो शख़्स हमेशा जूता पहनते वक़्त सीधे पाउं से और उतारते वक़्त उलटे पाउं से पहल करे वोह **तिल्ली की बीमारी** से मह़फ़ूज़ रहेगा। (حیاۃ الحیوان ج۲ ص ۲۸۹) **﴾4﴿** मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना जूता इस्ति'माल करे **﴾5﴿** किसी ने **ह़ज़रते** सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से अ़र्ज़ की, कि एक औ़रत (मर्दों की त़रह़) जूते पहनती है। उन्हों ने फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मर्दानी औ़रतों पर ला'नत फ़रमाई है। (اَبُو دَاوٗد ج٤ ص ٨٤ حديث ٤٠٩٩) **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : या'नी औ़रतों को मर्दाना जूता नहीं पहनना चाहिये बल्कि वोह तमाम बातें जिन में मर्दों और औ़रतों का इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) होता है इन में हर एक को दूसरे की वज़्अ़ इख़्तियार करने (या'नी नक़्क़ाली करने) से मुमानअ़त है, न मर्द औ़रत की वज़्अ़ (त़र्ज़) इख़्तियार करे, न औ़रत मर्द की। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 422) **﴾6﴿** जब बैठें तो जूते उतार लीजिये कि इस से क़दम आराम पाते हैं **﴾7﴿** इस्ति'माली जूता उलटा पड़ा हो तो सीधा कर दीजिये। (तंग दस्ती का एक सबब येह भी है कि) औंधे जूते को देखना और उस को सीधा न करना। हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त

हिस्सा 16 (304 सफ़हात) नीज़ 120 सफ़हात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये।

आ'ला ह़ज़रत की ख़िदमत में सुवाल : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में कुछ यूं अ़र्ज़ की गई : कुछ ग़रीब मुसल्मान ब ग़रजे़ **तब्लीग़े सलात** (या'नी नमाज़ की तब्लीग़ के लिये) शह्‌र से बाहर मवाज़आ़त (या'नी बा'ज़ देहात) में पैदल, धूप और प्यास की तक्लीफ़ उठा कर बिला किसी ज़ाती नफ़्अ़ के लालच के **फ़ी सबीलिल्लाह** आधी रात से उठ कर गए और दूसरे दिन वापस आए, बा'ज़ लोग उन में भूके प्यासे भी शामिल थे, उन की कोशिश से तक़्रीबन एक सो मुसल्मान मुस्तइदे नमाज़ (या'नी नमाज़ के लिये तय्यार) हुए। बयान किया जाए कि उन के लिये क्या अज्र है ताकि आगे हिम्मत बढ़े। हमारे इस नेक काम करने पर एक शख़्स ने कहा : "इस में रखा ही क्या है! कोई अपने लिये नमाज़ पढ़ेगा तुम क्यूं कोशिश करते हो।" वोह शख़्स कैसा है जो लोगों का ह़ौसला पस्त करता है ?

आ'ला ह़ज़रत का जवाब : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने कुछ इस त़रह **जवाब** इर्शाद फ़रमाया : नमाज़ की दा'वत देने वालों के लिये उन की **निय्यत** पर अज्रे अ़ज़ीम है, नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए़

किसी एक शख़्स को हिदायत अ़ता फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास **सुर्ख़ ऊंट** हों।" **(صحیح مسلم ص ۱۳۱۱ حدیث ۲۴۰۶)** हिदायत को जाने के लिये आते जाते जितने क़दम उन के पड़े हर क़दम पर दस नेकियां हैं, (चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला पारह **22 सूरए यासीन** की आयत नम्बर 12 में इर्शाद फ़रमाता है :)

وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ؕ

(پ۲۲ سورۂ یٰس:۱۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम लिख रहे हैं जो उन्हों ने आगे भेजा और जो निशानियां पीछे छोड़ गए।

येह कहना कि "**तुम क्यूं कोशिश करते हो**" शैत़ानी क़ौल है। **اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَ نَہْیٌ عَنِ الْمُنْکَر** (या'नी नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना) **फ़र्ज़** है, फ़र्ज़ से रोकना शैत़ानी काम है। (शिकार की मुमानअ़त के बा वुजूद) बनी इस्राईल में से जिन्हों ने (हफ़्ते को) मछली का शिकार किया था वोह भी **बन्दर** कर दिये गए और जिन्हों ने उन्हें नसीह़त करने को मन्अ़ किया था (वोह भी तबाह हो गए) (मन्अ़ करने वालों का क़ौल पारह 9 **सूरतुल आ'राफ़** की आयत नम्बर 164 में बयान किया गया है :)

لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्यूं नसीह़त करते हो उन लोगों को जिन्हें **अल्लाह** हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अ़ज़ाब देने वाला।

(तो गुनाह से रोकने वालों को गुनाह से रोकने के कारे ख़ैर से मन्अ़ करने वाले) भी तबाह हुए और नसीहत करने वालों ने नजात पाई। और येह कहना कि "**इस** (या'नी नमाज़ की दा'वत देने के काम) **में रखा ही क्या है !**" सब से सख़्त कलिमा है, कहने वाले को तज्दीदे इस्लाम व तज्दीदे निकाह़ चाहिये। واللّٰهُ تعالٰی اَعْلَمُ۔

(मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 117)

सुर्ख़ ऊंटों से क्या मुराद है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इस मुबारक फ़तवे में नेकी की दा'वत देने वालों की हौसला शिकनी करने वालों के इस जुम्ले "तुम क्यूं कोशिश करते हो" को शैत़ानी क़ौल क़रार दे कर इस की मज़म्मत की गई है, यहां वोह लोग इब्रत ह़ासिल करें जो बसा अवक़ात **मुबल्लिग़ीन** से कह देते हैं कि "छोड़ो छोड़ो इस को समझाने का क्या फ़ाएदा। येह तो नेकी की बात मानता ही नहीं" (गुनाह छोड़ता ही नहीं, सुधरता ही नहीं, राहे रास्त पर आता ही नहीं) येह जुम्ला बिल्कुल ग़लत़ ग़लत़ और ग़लत़ है यक़ीनन समझाना फ़ाएदे से ख़ाली होता ही नहीं, अच्छी निय्यत हो तो इस्लाह़ के लिये समझाना कारे सवाब है तो क्या "सवाब" मिलने में "फ़ाएदा" नहीं ? "येह मानता ही नहीं !" बोल कर आप क्या कहना चाहते हैं ? क्या आप नहीं जानते कि मुबल्लिग़ की ज़िम्मेदारी "मनवाना" नहीं फ़क़त़ "पहुंचाना" है मनवाने वाली ज़ात रब्बे काएनात جَلَّ جَلَالُهٗ की है। इस फ़तवे में "मुस्लिम शरीफ़" की येह ह़दीसे पाक बयान की गई है कि

अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए़ किसी एक शख़्स को हिदायत अ़ता फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास **सुर्ख़ ऊंट** हों। (مُسلِم ص١٣١١ حديث ٢٤٠٦) **ह़ज़रते** अ़ल्लामा यह़्या बिन शरफ़ नववी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى इस ह़दीसे नबवी की शर्ह़ में लिखते हैं : "**सुर्ख़ ऊंट** अहले अ़रब का बेश क़ीमत माल समझा जाता था, इस लिये ज़र्बुल मसल (या'नी कहावत) के तौ़र पर सुर्ख़ ऊंटों का ज़िक्र किया गया। उख़्रवी उमूर की दुन्यवी चीज़ों से तश्बीह (या'नी मिसाल) सिर्फ़ समझाने के लिये है वरना ह़क़ीक़त येही है कि हमेशा बाक़ी रहने वाली आख़िरत का एक ज़र्रा भी दुन्या और इस जैसी जितनी दुन्याएं तसव्वुर की जा सकें, उन सब से बेहतर है।" (شَرحِ مُسلِم لِلنَّوَوِی ج١٥ ص١٧٨)

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे बरकतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की 44 निय्यतें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से किये जाने वाले सुवाल के ज़रीए़ येह भी मा'लूम हुवा कि नमाज़ों का जज़्बा रखने वाले उस दौर के मुसल्मान भी नेकी की दा'वत के लिये क़ाफ़िले में सफ़र किया करते थे और अब तो फ़ैज़ाने रज़ा से इस मदनी काम के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** भी क़ाइम हो गई है। जिस का मदनी पैग़ाम ता दमे तह़रीर

कमो बेश दुन्या के 150 मुल्कों में पहुंच चुका है ! सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िरों के तो बस वारे ही न्यारे हो जाते और नेकियों के ढेर लग जाते हैं, इस मदनी सफ़र में जिस क़दर **अच्छी अच्छी निय्यतें** करेंगे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उसी क़दर सवाब भी बढ़ता चला जाएगा। मसलन ह़स्बे ह़ाल इन में येह निय्यतें की जा सकती हैं : ❁ अगर शर्ई मिक्दार का सफ़र हुवा तो घर में रवानगिये सफ़र की दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करूंगा ❁ अपने ज़ाती ख़र्च पर सफ़र करूंगा ❁ पल्ले से खाऊंगा ❁ हर बार सुवारी की दुआ़ पढ़ूंगा और मौक़अ़ मिला तो पढ़ाऊंगा ❁ अगर किसी इस्लामी भाई को जगह नहीं मिलेगी तो अपनी निशस्त तर्क कर के उस पर उस को **ब इस्रार** बिठाऊंगा ❁ बस या रेलगाड़ी में कोई बूढ़ा या बीमार मुसल्मान नज़र आएगा तो उस के लिये निशस्त ख़ाली कर दूंगा ❁ मदनी क़ाफ़िले वालों की ख़िदमत करूंगा ❁ अमीरे क़ाफ़िला की इत़ाअ़त करूंगा ❁ ज़बान, आंखों और पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाऊंगा या'नी फ़ुज़ूल गोई, फ़ुज़ूल निगाही से बचूंगा और ख़्वाहिश से कम खाऊंगा ❁ सफ़र में भी हर मौक़अ़ पर "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल जारी रखूंगा ❁ वुज़ू, नमाज़ और क़ुरआने पाक पढ़ने में जो ग़लतियां होंगी वोह आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रह कर दुरुस्त करूंगा। (जो जानता हो वोह येह निय्यत करे कि सिखाऊंगा) ❁ सुन्नतें और दुआ़एं सीखूंगा और ❁ दूसरों को सिखाऊंगा और ❁ इन पर ज़िन्दगी भर अ़मल करता रहूंगा ❁ तमाम फ़र्ज़ नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में

तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा करूंगा ❁ तहज्जुद, इशराक़, चाश्त और अव्वाबीन की नमाजे़ं पढ़ूंगा ❁ एक लम्हा भी ज़ाएअ़ नहीं होने दूंगा, फ़ारिग़ अवक़ात मिले तो **अल्लाह अल्लाह** करता रहूंगा, दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहूंगा। (दौराने दर्सो बयान वग़ैरा बिग़ैर कुछ पढ़े ख़ामोशी से सुनना होता है) ❁ "सदाए मदीना" लगाऊंगा या'नी नमाज़े फ़ज्र के लिये मुसल्मानों को जगाऊंगा ❁ रास्ते में जब जब मस्जिद नज़र आएगी तो बुलन्द आवाज़ से !صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب कह कर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد कहूंगा और कहलवाऊंगा ❁ बाज़ार में जाना पड़ा तो बिल ख़ुसूस नीची निगाहें किये गुज़रते हुए बाज़ार की दुआ़ पढ़ूंगा और मौक़अ़ मिला तो पढ़ाऊंगा ❁ मुसल्मानों से पुर तपाक त़रीक़े पर मुलाक़ात करूंगा ❁ ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश करूंगा ❁ हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये मुसल्मानों को तय्यार करूंगा ❁ नेकी की दा'वत दूंगा ❁ दर्स दूंगा ❁ मौक़अ़ मिला तो सुन्नतों भरा बयान करूंगा ❁ जहां क़ाफ़िला जाएगा वहां के किसी बुज़ुर्ग के मज़ार शरीफ़ पर मदनी क़ाफ़िले के हमराह ह़ाज़िरी दूंगा ❁ सुन्नी आ़लिम की ज़ियारत करूंगा ❁ अगर मदनी क़ाफ़िले का कोई मुसाफ़िर बीमार हो गया तो तीमार दारी करूंगा ❁ अगर किसी मुसाफ़िर के पास ख़र्च ख़त्म हो गया तो अमीरे क़ाफ़िला के मश्वरे से उस की माली इमदाद करूंगा ❁ सफ़र में अपने लिये, घर वालों के लिये और उम्मते मुस्लिमा के लिये दुआ़ए ख़ैर करूंगा ❁ जिस मस्जिद में क़ियाम होगा वहां वुज़ूख़ाने और

मस्जिद की सफ़ाई करूंगा ❁ अगर किसी ने बिला वज्ह सख़्ती की तब भी सब्र करूंगा ❁ थकन वग़ैरा के सबब ग़ुस्सा आ गया तो ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगाते हुए ज़ब्त़ करूंगा ❁ अगर मस्जिद में मदनी क़ाफ़िले को क़ियाम की इजाज़त न मिली तो किसी से उलझने के बजाए इस को अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर करूंगा और मदनी क़ाफ़िले के साथ हाथ उठा कर दुआ़ए ख़ैर करता हुवा पलटूंगा ❁ अगर कोई झगड़ा करेगा तो ह़क़ पर होने के बा वुजूद उस से झगड़ा न कर के ह़दीसे पाक में दी हुई इस बिशारत का ह़क़दार बनूंगा, जिस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **जो ह़क़ पर होने के बा वुजूद झगड़ा नहीं करता मैं उस के लिये जन्नत के (अन्दरूनी) कनारे में एक घर का ज़ामिन हूं ।** (ابوداوٗدج٤ ص ٣٣٢حديث ٤٨٠٠) ❁ अगर किसी ने ज़ुल्मन मारा भी तो जवाबी कारवाई करने के बजाए शुक्र अदा करूंगा कि राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मार खाने के बा वजूद दीन पर डटे रहने वाली "सुन्नते बिलाली" अदा हुई ❁ अगर मेरी वज्ह से किसी मुसल्मान की दिल आज़ारी हो गई तो उसी वक़्त आ़जिज़ी के साथ मुआ़फ़ी मांगूंगा ❁ चूंकि हर वक़्त साथ रहने में ह़क़ तलफ़ियों का इम्कान ज़ियादा रहता है लिहाज़ा वापसी पर हर एक से फ़र्दन फ़र्दन इन्तिहाई लजाजत के साथ मुआ़फ़ी तलाफ़ी करूंगा ❁ (शर्ई) सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिये तोह़फ़ा ले जाने की सुन्नत अदा करूंगा ❁ (सफर अगर शर्ई हुवा तो) मस्जिद में आ कर ग़ैर मक्रूह वक़्त में वापसिये सफ़र के दो नफ़्ल पढ़ूंगा ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيْب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

उम्मते मुस्तफ़ा की ख़ुसूसिय्यत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाहु रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ इस उम्मत की ख़ुसूसिय्यत बयान करते हुए पारह 4 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 110 में इर्शाद फ़रमाता है :

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई, भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) पर ईमान रखते हो।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हम ख़ुश नसीब हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! हम ख़ुश नसीब हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीबे मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दामने करम हमारे गुनहगार हाथों में आया, यक़ीनन हमारे प्यारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में सब से अफ़्ज़लो आ'ला हैं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत भी तमाम उममे साबिक़ा (या'नी पिछली उम्मतों) से अफ़्ज़ल है। अफ़्ज़लिय्यत का सबब हरगिज़ हरगिज़ येह नहीं कि इस उम्मत में सरमाया दारों की कसरत होगी या येह लोग दुन्यवी त़ौर पर बहुत ज़ियादा ता'लीम याफ़्ता होंगे, इन में **इन्जीनियर** और डॉक्टर ब कसरत होंगे, न ही फ़ज़ीलत की येह वज्ह है कि येह जंगजू, बहादुर और त़ाक़त वर होंगे या येह इस लिये अफ़्ज़ल हैं कि निहायत ही चालाक व ज़ीरक (या'नी

होशियार) होंगे बल्कि इन की **अफ़्ज़लिय्यत की वज्ह** तो येह है कि येह اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी भलाई का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने) के अहम मन्सब पर फ़ाइज़ हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे कि हम अपने इस मन्सबे आ़ली की **अहम्मिय्यत** समझने में काम्याब हो जाएं।

اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر की ता'रीफ़ : मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "**तफ़्सीरे नईमी**" में इन आयाते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : "**अल मा'रूफ़**" और "**अल मुन्कर**" में सारी भलाइयां **अज़ मुस्तह़ब्बात ता ईमानिय्यात** (या'नी मुस्तह़ब्बात से ले कर इस्लामी अ़क़ाइद तक) दाख़िल हैं, और सारी बुराइयां **अज़ मक्रूहात ता कुफ़्रिय्यात** (या'नी ना पसन्दीदा बातों से ले कर हर क़िस्म के कुफ़्र तक) शामिल हैं। और "**अम्र**" (के मा'ना हैं हुक्म) या'नी (यहां) हुक्म से मुराद हर क़िस्म का हुक्म है, ज़बानी हो या क़लमी या त़ाक़त वाला, ख़्वाह बड़ों से अ़र्ज़ कर के हो या साथियों को मश्वरा दे कर, या छोटों को दबाव से हुक्म दे कर, या'नी तुम्हारी शान येह है कि हर भलाई का हर त़रह़ हुक्म दो और हर ख़ूबी हर त़रह़ फैलाओ और हर बुराई को हर त़रह़ मिटाओ और लोगों को इस (या'नी बुराई) से बाज़ रखो। **मज़ीद** फ़रमाते हैं : इस आयते मुक़द्दसा में गोया फ़रमाया गया कि ऐ मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत ! तुम मेरी सिफ़ते हिदायत के मज़्हर (या'नी ज़ाहिर करने वाले) हो, लिहाज़ा तुम बेहतरीन उम्मत हो, तुम्हारे दम से तमाम लोग फ़ाएदा उठाते रहेंगे, मैं तुम्हारे ज़रीए लोगों को

ईमान, क़ुरआन और इरफ़ान (या'नी अपनी पहचान) बख़्शूंगा और तुम्हारी ही रोशनी से उन्हें राहे जिनान (या'नी जन्नत का रास्ता) दिखलाऊंगा, जो मुझ तक पहुंचना चाहे तुम्हारे ज़ुमरे (या'नी गुरौह) में आ जाए।

(तफ़्सीरे नईमी, जि. 4, स. 89, 95)

सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें

नेक हो जाएं मुसल्मान मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुसल्मानों की भारी अक्सरिय्यत बे अ़मली का शिकार है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मानों में "नेकी की दा'वत" आ़म करने की जितनी ज़रूरत आज है शायद पहले कभी न थी। अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! आज मुसल्मानों की भारी अक्सरिय्यत बे अ़मली का शिकार है, नेकियां करना नफ़्स के लिये बेहद दुश्वार और इरतिकाबे गुनाह बहुत आसान हो चुका है, मस्जिदों की वीरानी और सिनेमा घरों और डिरामा गाहों की रौनक़, दीन का दर्द रखने वालों को आठ आठ आंसू रुलाती है। टी वी, वी सी आर, डिश एन्टीना, इन्टरनेट और केबल का ग़लत़ इस्ति'माल करने वालों ने गोया अपनी आंखों से ह़या धो डाली है, तक्मीले ज़रूरिय्यात व ह़ुसूले सहूलिय्यात की ह़द से ज़ियादा जिद्दो जहद ने मुसल्मानों की भारी ता'दाद को फ़िक्रे आख़िरत से यक्सर ग़ाफ़िल कर दिया है। गाली देना, तोहमत लगाना, बद गुमानी करना, ग़ीबत करना, चुग़ली खाना, लोगों के ऐ़ब जानने की जुस्तजू में

रहना, लोगों के ऐ़ब उछालना, झूट बोलना, झूटे वा'दे करना, किसी का माल नाह़क़ खाना, ख़ून बहाना, किसी को बिला इजाज़ते शर्ई तक्लीफ़ देना, क़र्ज़ दबा लेना, किसी की चीज़ आ़रियतन (या'नी वक़्ती तौ़र पर) ले कर वापस न करना, मुसल्मानों को बुरे अल्क़ाब से पुकारना, किसी की चीज़ उसे ना गवार गुज़रने के बा वुजूद बिला इजाज़त इस्ति'माल करना, शराब पीना, जूआ खेलना, चोरी करना, ज़िना करना, फ़िल्में डिरामे देखना, गाने बाजे सुनना, सूद व रिश्वत का लेन देन करना, मां बाप की ना फ़रमानी करना और इन्हें सताना, अमानत में ख़ियानत करना, बद निगाही करना, औ़रतों का मर्दों की और मर्दों का औ़रतों की मुशाबहत (या'नी नक़्क़ाली) करना, बे पर्दगी, ग़ुरूर, तकब्बुर, ह़सद, रियाकारी, अपने दिल में किसी मुसल्मान का बुग़्ज़ व कीना रखना, शुमातत (या'नी किसी मुसल्मान को मरज़, तक्लीफ़ या नुक़्सान पहुंचने पर ख़ुश होना), ग़ुस्सा आ जाने पर शरीअ़त की ह़द तोड़ डालना, गुनाहों की ह़िर्स ह़ुब्बे जाह, बुख़्ल, ख़ुद पसन्दी वग़ैरा मुआ़मलात हमारे मुआ़शरे में बड़ी बेबाकी के साथ किये जाते हैं।

गुनाह करने वालों का दूसरों पर भी वबाल : कसीर गुनाह ऐसे हैं जिन की वज्ह से बराहे रास्त दूसरों को नुक़्सान उठाना पड़ता है, मसलन अगर कोई शख़्स चोरी का गुनाह करेगा तो उस शख़्स का नुक़्सान होगा जिस की चीज़ चुराई जाएगी, बिल्कुल येही मुआ़मला डाका डालने, अस्लिह़ा दिखा कर मोबाइल फ़ोन वग़ैरा छीन लेने वालों का है। दुन्यवी

नुक़्सानात तो एक त़रफ़ रहे गुनाह करने वाले का अस्ल बड़ा नुक़्सान तो आख़िरत का है। **ऐ सुन्नतों का दर्द रखने वाले आ़शिक़ाने रसूल !** ज़रा सोचिये !! गुनाहों की दलदल में फंसने वालों को कौन निकालेगा ? अख़्लाक़ी तनज़्ज़ुलों और पस्तियों की त़रफ़ गिरते चले जाने वालों को किरदार की बुलन्दियों की जानिब कौन उभारेगा ? जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल में मसरूफ़ रहने वालों को जन्नत में ले जाने वाले आ'माल पर कौन लगाएगा ? **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हमें ख़ुद ही एक दूसरे की इस्लाह़ की कोशिश करनी होगी। चन्द **सच्ची ह़िकायात** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये और ''नेकी की दा'वत'' का दिल में जज़्बा बढ़ाइये।

मस्जिद पर ताला था : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़शिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िले** 3 दिन, 12 दिन, 30 दिन और 12 माह के लिये राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करते रहते हैं। आ़शिक़ाने रसूल का एक **मदनी क़ाफ़िला** सुन्नतों की तरबियत की ग़रज़ से एक गाउं में पहुंचा वहां की **मस्जिद पर ताला** पड़ा था, लोगों से तरकीब बना कर जब मस्जिद का दरवाज़ा खोला तो मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर येह देख कर ग़मगीन हो गए कि त़वील अ़र्से से सफ़ाई न किये जाने के सबब मस्जिद के दरो दीवार गर्दो ग़ुबार से अटे पड़े हैं और हर त़रफ़ मकड़ियों के जाले तने हुए हैं। मदनी क़ाफ़िले वालों के इस्तिफ़्सार (या'नी पूछने)

पर बताया गया कि "काफ़ी अ़र्सा हुवा यहां के मुसल्मानों ने नमाज़ पढ़नी छोड़ दी है जिस की बिना पर इमाम साहिब भी जा चुके हैं, इसी वज्ह से मस्जिद पर ताला लगा दिया गया है।" अफ़्सोस ! मस्जिद बन्द कर दी गई थी और गाउं में हर त़रफ़ गुनाहों की गर्म बाज़ारी थी, अक्सर दुकानों पर गाने बाजे और T.V. पर फ़िल्में दिखाने का सिल्सिला जारी था।

मस्जिद की ह़ैरत अंगेज़ रौनक़ें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! अब मुसल्मानों की ह़ालत किस क़दर **अबतर** (या'नी बुरी) होती जा रही है ! ह़ालां कि एक दौर ऐसा भी था कि रात दिन मस्जिदें आबाद हुवा करती थीं, चुनान्चे **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "नेक लोग फ़िक्रे आख़िरत की वज्ह से मस्जिदों में पड़े रहते थे ताकि जितना ज़ियादा हो सके इस मुख़्तसर तरीन ज़िन्दगी की मोहलत से फ़ाएदा उठा कर आख़िरत की अबदी (या'नी हमेशगी वाली) ने'मतें जम्अ़ कर लें। इबादत करने वालों की कसरत के सबब मस्जिद के बाहर लड़के वग़ैरा अश्याए ख़ुर्दो नोश (या'नी खाने पीने की चीज़ें) फ़रोख़्त करते, यूं खाने पीने की अश्या भी इबादत गुज़ारों को ब आसानी दस्तयाब हो जातीं।" سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! वोह कैसा पाकीज़ा दौर था कि मस्जिदों में रात दिन रौनक़ होती थी और आह ! आज तो मसाजिद की वीरानी देख कर कलेजा मुंह को आता है। ऐ मौत का

यक़ीन रखने वाले इस्लामी भाइयो ! जिस से बन पड़े वोह कस्बे ह़लाल और वालिदैन व औलाद वग़ैरा की देखभाल नीज़ दीगर हुक़ूक़ुल इ़बाद की बजा आवरी के बा'द जो वक़्त फ़ारिग़ बचे उसे ज़रूर ज़िक्रो दुरूद, फ़िक्रे आख़िरत और अच्छी सोह़बत में गुज़ारने की कोशिश करे । **(کیمیائے سعادت ج ۱ ص ۳۳۹)** हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कोई लम्ह़ा **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ख़ाली न गुज़रता था। काश ! हमें भी अनमोल वक़्त की क़द्र नसीब हो जाती।

या ख़ुदा क़द्र वक़्त की दे दे

कोई लम्ह़ा न फ़ालतू गुज़रे

नमाज़े बा जमाअ़त का अ़जीब जज़्बा : पहले के मुसल्मान बा जमाअ़त नमाज़ों का भी निहायत ज़बर दस्त एहतिमाम फ़रमाया करते थे चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद **ग़ज़ाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : (पारह 18 **सूरतुन्नूर** आयत नम्बर 37 में रब्बे ग़फ़ूर عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने नूरुन अ़ला नूर है :)

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّ لَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ اِقَامِ الصَّلٰوةِ وَ اِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۪ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَ الْاَبْصَارُ ﴿ۙ۳۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह मर्द जिन्हें ग़ाफ़िल नहीं करता कोई सौदा और न ख़रीदो फ़रोख़्त **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की याद और नमाज़ बरपा रखने और ज़कात देने से, डरते हैं उस दिन से जिस में उलट जाएंगे दिल और आंखें।

येह आयते करीमा नक़्ल करने के बा'द सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद **ग़ज़ाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى का बयान है कि बा'ज़ मुफ़स्सिरीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن ने लिखा है कि इस में उन नेक लोगों की त़रफ़ इशारा है कि उन में से जो **लोहार** होता था वोह अगर ज़र्ब (या'नी चोट) लगाने के लिये हथोड़ा ऊपर उठाए हुए होता और इसी ह़ालत में **अज़ान** की आवाज़ सुनता तो अब हथोड़ा लोहे वग़ैरा पर मारने के बजाए फ़ौरन रख देता नीज़ अगर **मोची** या'नी चमड़ा सीने वाला सूई चमड़े में डाले हुए होता और जूं ही अज़ान की आवाज़ उस के कानों में पड़ती तो **सूई** को बाहर निकाले बिग़ैर चमड़ा और सूई वहीं छोड़ कर बिला ताख़ीर **मस्जिद** की त़रफ़ चल पड़ता। या'नी उठे हुए हथोड़े की एक ज़र्ब लगा देना या सूई को दूसरी त़रफ़ निकालना भी उन के नज़्दीक **ताख़ीर** में शामिल था ह़ालां कि इस में वक़्त ही कितना लगता है!

(کیمیائے سعادت ج ۱ ص۳۳۹)

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही
मैं पढ़ता रहूं सुन्नतें, वक़्त ही पर हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही
दे शौक़े तिलावत दे ज़ौक़े इबादत
रहूं बा वुज़ू मैं सदा या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बूढ़ा रोने लगा : आ़शिक़ाने रसूल का 30 दिन का एक **मदनी क़ाफ़िला** राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र पर था। इस दौरान एक मक़ाम पर

सुन्नतें सीखने सिखाने के **मदनी ह़ल्क़े** में जब ''ग़ुस्ल के फ़राइज़'' सिखाए गए तो एक बुज़ुर्ग रोते हुए कहने लगे कि ''मेरी उ़म्र 70 साल हो चुकी है मगर मुझे **ग़ुस्ल के फ़राइज़** की मा'लूमात न थी, आज **मदनी क़ाफ़िले** की बरकत से मुझे ग़ुस्ल के फ़राइज़ सीखने को मिले, अफ़्सोस ! मुझे तो येह तक पता न था कि ग़ुस्ल में फ़राइज़ भी होते हैं !''

सब से पहले क्या सीखना फ़र्ज़ है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ुस्ल के फ़राइज़ तक से ला इ़ल्मी का ए'तिराफ़ करने वाले 70 सालह इस्लामी भाई के वाक़िए़ से मदनी क़ाफ़िलों की ज़रूरत व **अहम्मिय्यत** का आप बख़ूबी अन्दाज़ा लगा सकते हैं। किसी मुसल्मान को बीमार या भूक प्यास में गिरिफ़्तार या बे रोज़गार व क़र्ज़दार या आफ़तों में गिरिफ़्तार या दुन्यवी मुसीबतों का शिकार या मुश्किलात से दो चार देख कर हमें तर्स आता है और आना भी चाहिये लेकिन गुनाहों की भरमार के सबब आख़िरत को दाव पर लगाने वाले और अपने आप को क़ब्र व जहन्नम के अ़ज़ाब का ह़क़दार बनाने वाले मुसल्मान पर बिल्कुल ही तर्स नहीं आता येह क़ाबिले अफ़्सोस है गोया दुन्यवी मुसीबतों के मुक़ाबले में आख़िरत की मुसीबतों को कमतर समझ लिया गया है ! ह़ालां कि ''जिस्मानी मरीज़'' के मुक़ाबले में रूह़ानी या'नी **गुनाहों का मरीज़** ज़ियादा तवज्जोह का मुस्तह़िक़ है कि मुसल्मान को दुन्या की तक्लीफ़ें आख़िरत में राह़तें दिला सकती हैं मगर गुनहगार को उस के

गुनाह दोज़ख़ के ग़ार में पहुंचा सकते हैं। लिहाज़ा इस बात की शिद्दत के साथ ज़रूरत है कि इल्मे दीन की रोशनी फैलाई जाए कि मा'लूमात होंगी जभी तो बन्दा गुनाहों से बचेगा, अगर गुनाह व सवाब की शुदबुद ही न होगी तो येह सुन्नतों भरी ज़िन्दगी क्यूंकर गुज़ार सकेगा ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल नादान मुसल्मान नफ़्सो शैतान के बहकावे में आ कर इस फ़ानी जहान पर तो दिलो जान से कुरबान है मगर उसे फ़राइज़ तक का इल्म नहीं हालां कि **सरकारे** दो[2] आलम, **नूरे मुजस्सम,** शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़तशम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ या'नी** इल्म हासिल करना हर मुसल्मान पर **फ़र्ज़** है। (اِبن ماجه ج١ ص١٤٦ حديث ٢٢٤) इस ह़दीसे पाक से स्कूल कॉलेज की मुरव्वजा दुन्यवी ता'लीम नहीं बल्कि **ज़रूरी दीनी इल्म** मुराद है। लिहाज़ा सब से पहले **इस्लामी अ़क़ाइद** का सीखना फ़र्ज़ है, इस के बा'द **नमाज़** के फ़राइज़ व शराइत़ व मुफ़्सिदात (या'नी नमाज़ किस त़रह़ दुरुस्त होती है और किस त़रह़ टूट जाती है) फिर रमज़ानुल मुबारक की तशरीफ़ आवरी हो तो जिस पर रोज़े फ़र्ज़ हों उस के लिये **रोज़ों** के ज़रूरी मसाइल, जिस पर ज़कात फ़र्ज़ हो उस के लिये **ज़कात** के ज़रूरी मसाइल, इसी त़रह़ **ह़ज** फ़र्ज़ होने की सूरत में ह़ज के, **निकाह़** करना चाहे तो इस के, **ताजिर** को तिजारत के, **ख़रीदार** को ख़रीदने के, **नौकरी** करने वाले और नौकर रखने वाले को इजारे के, وَعلٰى هٰذَا الْقِيَاس

(या'नी और इसी पर क़ियास करते हुए) **हर मुसल्मान आ़क़िल व बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है ।** इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले ह़लाल व ह़राम भी सीखना फ़र्ज़ है । नीज़ **मसाइले क़ल्ब** (बात़िनी मसाइल) या'नी फ़राइज़े क़ल्बिया (बात़िनी फ़राइज़) मसलन आ़जिज़ी व इख़्लास और **तवक्कुल** वग़ैरहा और इन को ह़ासिल करने का त़रीक़ा और **बात़िनी गुनाह** मसलन **तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद,** बद गुमानी, बुग़्ज़ व कीना, शुमातत (या'नी किसी की मुसीबत पर ख़ुश होना) वग़ैरहा और इन का इलाज सीखना हर मुसल्मान पर **फ़र्ज़** है । (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 613-624 मुलाह़ज़ा फ़रमाइये) मोहलिकात या'नी हलाकत में डालने वाली चीज़ों जैसा कि वा'दा ख़िलाफ़ी, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बोहतान, बद निगाही, धोका, ईज़ाए मुस्लिम वग़ैरा वग़ैरा तमाम सग़ीरा व कबीरा गुनाहों के बारे में ज़रूरी अह़काम सीखना भी फ़र्ज़ है ताकि इन से बचा जा सके। ड्राइवर व पेसेन्जर, मियां बीवी, वालिदैन व औलाद, भाई और बहन, पड़ोसी व रिश्तेदार, क़र्ज़ ख़्वाह व क़र्ज़दार, सुपर वाइज़र व ठेकेदार, मज़दूर व मि'मार, किसान व ज़मीन दार, किराए पर लेने वाला और किराए पर देने वाला, ह़ाकिम व मह़कूम, उस्ताज़ व शागिर्द, डॉक्टर व ह़कीम, मुक़ीम व मुसाफ़िर, क़स्साब व माहीगीर, चन्दा करने वाला और चन्दा देने वाला,

मस्जिद या मद्रसा या क़ब्रिस्तान या समाजी इदारे वग़ैरा के मुतवल्लियान, जानवर बेचने वाला और पालने वाला, चरवाहा, धोबी, दरज़ी, बढ़ई (CARPENTER), लोहार, कारीगर आख़िरुज़्ज़िक्र पांचों से धुलवाने, सिलवाने और बनवाने वाले वग़ैरा वग़ैरा हर एक के लिये उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ ज़रूरी मसाइल जानना **फ़र्ज़े ऐ़न** है। शैत़ान के इस वस्वसे पर हरगिज़ तवज्जोह मत दीजिये कि सीखेंगे तो अ़मल करना पड़ेगा बल्कि इस हुक्मे शर्ई़ को ज़ेह्न में रख लीजिये कि ह़स्बे ह़ाल **फ़र्ज़ उ़लूम** न जानना गुनाह और न जानने के सबब गुनाह कर गुज़रना गुनाह दर गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

ख़ुदाया हम इस्लामी अह़काम सीखें

बचाएं जो दोज़ख़ से वोह काम सीखें

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अच्छी निय्यत की बरकत से मग़्फ़िरत हो गई

ख़लीफ़ा हारून रशीद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِ की ज़ौजा ज़ुबैदा को किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكِ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : **अल्लाह** पाक ने मुझे बख़्श दिया। पूछा : क्या मग़्फ़िरत का सबब वोही सड़क बनी जिसे आप ने बहुत ज़ियादा माल ख़र्च कर के मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ बनवाया था ? कहा : नहीं, उस सड़क का सवाब तो काम करने वालों को मिला, मुझे तो **अल्लाह** पाक ने मेरी अच्छी निय्यतों की वज्ह से बख़्शा है।

(الرسالۃ القشیریۃ، ص۲۲۳)

M.R.P. ₹ 00/-

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net